

में संपन्न समझौता ताकि इस बीच शांति स्थापना के उपायों पर विचार-विमर्श किया जा सके।

विराष्ट्रीयकरण पुं. (तत्.) अर्थ. सरकार द्वारा किसी राष्ट्रीयकृत उद्योग को अपने अधिकार और नियंत्रण से मुक्त करके निजी क्षेत्र के हाथों में दे देना विलो. राष्ट्रीयकरण।

विरासत स्त्री. (अर.) विधि. वारिस होने के नाते प्राप्त संपत्ति आदि अथवा संपत्ति प्राप्त होने का उत्तराधिकार, उत्तराधिकार, बपौती, वंशागति।

विरासी वि. (तद्.) दे. विलासी।

विरिंच/विरिंचि पुं. (तत्.) ब्रह्मा उदा. 'चलत विरिंचि कहा मोहि चीहना'- रामचरितमानस, तुलसीदास।

विरुग्ण वि. (तत्.) 1. अत्यधिक बीमार 2. झुका हुआ 3. विखंडित 4. ढूँठा, मोथरा।

विरुचि स्त्री. (तत्.) किसी अप्रिय व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति नकारात्मक पूर्वाग्रह, घृणा, द्वेष।

विरुज वि. (तत्.) जिसे कोई रोग न हो, रोग-रहित, नीरोग।

विरुझना अ.क्रि. (देश.) उलझना, किसी चीज में फंस जाना, उलझ जाना।

विरुद्ध वि. (तत्.) किसी संस्था, नियम, व्यक्ति आदि का विरोध करने वाला 1. विपरीत, असंगत, असंबद्ध 2. प्रतिकूल, गुणों में विपरीत 3. परस्पर विरोधी, वैपरीत्य को सिद्ध करने वाला 4. विरोधी, शत्रुतापूर्ण।

विरुद्धता स्त्री. (तत्.) विरोध होने का भाव, प्रतिकूलता, वैपरीत्य, विपरीतता।

विरुद्धार्थ वि. (तत्.) एक परस्पर विरोधी अर्थ वाला।

विरुथिनी स्त्री. (तत्.) वैशाख कृष्ण एकादशी।

विरुद पुं. (तत्.) 1. घोषणा, चिल्लाहट 2. प्रशस्ति, यशःकीर्तन 3. प्रशंसासूचक उपाधि।

विरुदावली स्त्री. (तत्.) किसी के गुण, प्रताप, यश, उदारता, पराक्रम आदि का सविस्तार वर्णन, प्रशंसा-गान, गुणावली।

विरुद्धकर्मा वि. (तत्.) 1. विपरीत कार्य करने वाला, असंगत कर्म करने वाला 2. श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही क्रिया के कई एक-दूसरे के विपरीत फल दिखाए जाते हैं।

विरुद्धरूपक पुं. (तत्.) काव्य. रीतिकालीन आचार्य कवि केशवदास के अनुसार रूपक अलंकार का एक भेद जो "रूपकातिशयोक्ति" ही है।

विरुद्धार्थक वि. (तत्.) विरुद्ध या विपरीत अर्थ प्रकट करने वाला पुं. वह शब्द जो किसी शब्द का ठीक विरोधी या विपरीत अर्थ भाव प्रकट करता हो जैसे- सम और असम दोनों एक-दूसरे के विरुद्धार्थक हैं।

विरुद्धार्थ-दीपक पुं. (तत्.) काव्य. दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही बात से दो परस्पर विरोधी क्रियाओं का एक साथ होना दिखाया जाता है।

विरुद्ध वि. (तत्.) उगा हुआ 1. बीज से फूटा हुआ, निकला हुआ, उत्पन्न 2. वृद्धि को प्राप्त, बढ़ा हुआ 3. कुसुमित, फूला हुआ 4. चढ़ा हुआ, सवार।

विरूप वि. (तत्.) 1. जिसकी आकृति विकृत हो गई हो, कुरूप, बदशकल, बदसूरत 2. अप्राकृतिक, विकटाकार 3. विविध रूपों वाला पुं. 1. पांडु रोग 2. शिव 3. कुरूपता 4. एक असुर का नाम।

विरूपकरण पुं. (तत्.) आकृति विकृत करना, क्षति पहुँचाना।

विरूपचक्षु पुं. (तत्.) जिसके नेत्र सामान्य न हों, शिव का विशेषण।

विरूपण पुं. (तत्.) शरीर के अंगों में कुछ परिवर्तन अथवा बदलाव करना।

विरूपता स्त्री. (तत्.) कुरूप होने का भाव, कुरूपता, बहुरूपता, विभिन्नता।